वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 112 | रविवार 20 अगस्त 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

आयुष्मान खुराना से स्टूडेंट ने पूछा 'पूजा' का फोन नंबर

जयपुर में एक्टर बोले- यहां न मैं पॉपुलर न राजपाल, पॉपुलर तो पूजा

जयपुर. कासं। एक्टर आयुष्मान खुराना, राजपाल यादव अपनी फिल्म 'ड्रीम गर्ल-2' के प्रमोशन के लिए शनिवार को जयपुर पहुंचे। जो 25 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। दोनों एक्टर जयपुर के जेएनयू (जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी) में स्टूडेंट्स के बीच पहुंचे। इस दौरान उन्होंने फिल्म में अपने किरदार पर बात करते हुए आयुष्मान ने कहा- यहां न मैं पॉपुलर हूं। न राजपाल यादव पॉपुलर हैं। पॉपुलर तो पूजा है। पूजा जैसा कोई दूसरा नहीं है। इस दौरान एक स्टूडेंट ने आयुष्मान से पूजा का नंबर ही पूछ लिया। दरअसल, ड्रीम गर्ल 2 फिल्म में आयुष्मान के किरदार का नाम पूजा है। जेएनयू में सुबह 11:00 बजे का कार्यक्रम था। एक्टर करीब 1 बजे स्टूडेंट्स के बीच पहुंचे। वहां स्टेज पर पहुंच कर फिल्म के सॉन्ग 'बजे दिल का टेलीफोन' पर स्टूडेंट के साथ खूब थिरके। जेएनयू पहुंचे आयुष्मान खुराना ने स्टूडेंट से बात करते हुए कहा- मैं दूसरी बार जयपुर आया हूं। इससे पहले ड्रीम गर्ल वन की प्रमोशन के लिए आया था। वह फिल्म सुपरहिट गई थी। इस पर राजपाल यादव ने कहा- सब जगह पूजा की पूजा चल रही है। हमें भी पूजा में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। राजपाल ने कहा- आजकल ताली नहीं बजाने का फैशन चला गया है।

फ्यूचर में सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री का हब बन सकता है जयपुर

जयपुर. कासं

आईटी सेक्टर में जयपुर बहुत तेजी से ग्रोथ कर रहा है। आने वाले समय में जयपुर सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री का हब बन सकता है, क्योंकि यहां टैलेंट की कमी नहीं है। इसका सबसे बड़ा कारण है जयपुर में भविष्य के लिए अच्छे संसाधन मौजूद है। यह बात इंफोसिस के संस्थापक और पद्मश्री एन.आर. नारायण मूर्ति ने कही। मौका था जयपुर सिटीजन फोरम की ओर से जेसीएफ फेस्टिवल के दूसरे दिन शुक्रवार को बिड़ला ऑडिटोरियम में आयोजित टॉक शो का। टॉक शो का विषय भारतीय अर्थव्यवस्था, सूचना प्रौद्योगिकी और रिफॉर्म्स था। कार्यक्रम में मूर्ति ने कहा कि बिना पैसों के खुशी मिलती है। इसके लिए अच्छा संगीत सुने, अच्छी किताबे पढ़े और अच्छे दोस्त बनाए। उन्होंने बताया कि उनके पास 12 से 13 हजार फिजिकल और 2500 किताबें ऑनलाइन है। अच्छे बिजनेसमैन के लिए विल पावर, डिरमिनेशन और सेलिंग बहूत जरूरी है। हार्डवर्क के साथ स्मार्टली भी करना बहुत जरूरी है क्योंकि समय कीमती है। कार्यक्रम में चंद्र पी गुरनानी ने कहा कि हर क्षेत्र में अपने लायक जगह आपको खुद ढूंढनी होगी। उन्होंने कहा सेल्समैन और बिजनेसमैन से ही देश की आर्थिक ग्रोथ होती है। सबसे कठिन जॉब सेल्समैन की होती है। राजनेता, कॉरपरेट , ब्यूरोक्रेसी तीनों एक साथ काम करेंगे तो इंडिया जरूर ग्रोथ करेगा। मेरा मानना है कि अपने काम से दूसरों की जिंदगी कठिन न बनाए। अपनी आंखे खुली रखकर सपने देखे और हमेशा अपने सपनों को अंजाम तक पहुंचाएं। जेसीएफ चेयरमैन राजीव अरोड़ा ने बताया कि लोगों और खासकर युवाओं को कला एंव संस्कृति और विरासत से जोड़ने और जयपुर को सांस्कृतिक हब बनाने के साथ ही अंगदान की मुहिम से जोड़ने के लिए जेसीएफ का आयोजन किया गया है।

मौसम विभाग का मानसून अलर्ट, इन जिलों में 3 दिन होगी झमाझम बारिश, वज्रपात संग मेघ गरजेंगे

जयपुर. कासं

मानसून ने राजस्थान में एक बार फिर से दस्तक दे दी है। जैसलमेर, बाड़मेर एरिया पर एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन बना हुआ है। अब तो राजस्थान के कई जिलों में तीन दिन तक झमाझम बारिश होगी। मौसम विभाग का ताजा अलर्ट है कि 20 अगस्त को राजस्थान के 19 जिलों में और बाकी दो दिन 21-22 अगस्त को हल्की से मध्यम बारिश होगी। साथ मेघ गरजेंगे और आकाशीय बिजली चमकेगी। मौसम विज्ञानियों का कहना है कि मानसून की ट्रफ लाइन मौजूदा वक्त उत्तरी दिशा में हिमालय की तलहटी में है। धीरे-धीरे खिसक रही है। राजस्थान में मौसम का नया बदलाव बंगाल की खाड़ी में बने

नए सिस्टम के चलते देखने को मिला है। एक साइक्लोनिक सकुर्लेशन जैसलमेर, बाड़मेर एरिया पर बना हुआ है। जबकि बंगाल की खाड़ी पर एक लो-प्रेशर एरिया बन हुआ है। यह धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। इस सिस्टम के वेल मार्क लो-प्रेशर एरिया बनने की संभावना जताई जा रही है। मौसम विभाग का ढ्ढ्रूद्बद्भ्ल्ल है कि 20-21-22 अगस्त को कोटा, जयपुर, भरतपुर, उदयपुर व अजमेर संभाग में हल्की-मध्यम बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार 20 अगस्त को राजस्थान के अलवर, बांसवाड़ा, बारां, भरतपुर, भीलवाड़ा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, जयपुर, झालवाड़, झुंझुनूं, करौली, कोटा, सवाईमाधोपुर, सीकर, टोंक और उदयपुर में वज्रपात के साथ-साथ मेघगर्जन भी होगा।

जैन सोशल ग्रुप विजय संगिनी ने व्हीलचेयर भेंट की

उदयपुर. शाबाश इंडिया

जैन सोशल ग्रुप विजय संगिनी की अध्यक्ष निर्मला कोठारी ने बताया की फेडरेशन सेवा सप्ताह के तहत संगिनी ग्रुप से संध्या नाहर द्वारा एक व्हीलचेयर मेवाड़ मारवाड़ रीजन द्वारा संचालित मेडिकल इक्विपमेंट बैंक में भेंट की। उक्त कार्यक्रम में मेवाड़ मारवाड़ रीजन के चेयरमैन अनिल नाहर, सचिव महेश पोरवाल, उपाध्यक्ष सुभाष मेहता, मेडिकल इक्विपमेंट बैंक के चेयरमैन श्रीमान श्यामलाल शिशोदिया व संचालक नरेंद्र सेठ,विजय सिंह चपलोत, सूरज मल जी पोरवाल,विजय ग्रुप अध्यक्ष अरविंद जी बडाला, सचिव हिम्मत सिसोदिया, राजेश खमेसरा, गुणवंत बागरेचा, किशोर कोठारी, लोकेंद्र कोठारी ,दिनेश मुनोत, संगिनी कॉर्डिनेटर शकुंतला पोरवाल, कन्वीनर मधु खमेसरा, जॉन कोऑर्डिनेटर मंजू गांग, उर्मिला शिशोदिया, एवं रेखा जैन और संगिनी सदस्य स्नेह लता वागरेचा, प्रियंका तलेसरा, मंजू नाहर, ट्विंकल नाहर, वेलिका जैन, ललिता बापना, लता चावत, मधु मुनोत,वनिता पामेचा, सुनीता कोठारी अनिता भंडारी, रिया नाहर रानी जैन आदि उपस्थित थी। सभी उपस्थित रीजन पदाधिकारियों, संगिनी विजय पदाधिकारी,तथा जैन सोश्यल ग्रुप विजय के पदाधिकारियों व सभी संगिनी बहनों तथा ग्रुप सदस्यों का स्वागत अभिनंदन कमेटी चेयरमैन द्वारा किया गया।अपने आभार अभिव्यक्ति में रीजन चेयरमैन श्रीमान अनिल जी नाहर सा. , संगिनी विजय अध्यक्ष श्रीमती निर्मला कोठारी व चेयरमैन श्याम लाल शिशोदिया ने सेवा के इस पुनीत कार्य मे उपकरण भेंट हेतु नाहर परिवार की प्रशंसा तथा अनुमोदना की। इस अवसर पर हमारे उजार्वान, प्रगतिशील, दूरदर्शी व संकल्पशील रीजन चेयरमैन अनिल नाहर ने मेडिकल इक्विपमेंट बैंक को एक मिनी एंबुलेंस जैन सोश्यल ग्रुप विजय की मार्फत देने की घोषणा की। इस पुनीत कार्य को पूरा करने हेतु विजय ग्रुप के अध्यक्ष अरविन्द बडाला ने 100000/- रुपए देने की तुरन्त घोषणा की। अनिल नाहर सा ने विजय ग्रुप की ओर से दो माह में एम्बुलेंस मंगवा कर मेडिकल इक्विपमेंट बैंक में भेंट करने का निर्णय सभी विजय ग्रुप के उपस्थित पदाधिकारियों, सदस्यों की सहमति से लेकर घोषित किया। फेडरेशन का सर्वोत्तम मेडिकल इक्विपमेंट बैंक आज सभी आवश्यक संसाधनों तथा उपकरणों से सुसज्जित है और मिनी एम्बुलेंस के आने पर सेवा प्रकल्प में भी सबसे अग्रणी हो कर रीजन तथा फेडरेशन में मेवाड़ मारवाड़ रीजन का नाम स्वर्णिम इतिहास में सम्मिलित करवा कर गौरवान्वित महसूस कर सकेंगे।

शहीदों का स्मरण, धर्म बना माध्यम

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री जैन श्वेताम्बर संस्था, श्याम नगर, जयपुर में 1857 के गुलाम भारत से लेकर 15 अगस्त 1947 के आजादी पर्व तक अपने प्राण न्यौछावर करने वालें माँ भारती के वीर सपूतों की याद में भक्ति संध्या और अरिहंत परमात्मा की अंग रचना की गई। सम्पूर्ण भारत मे शायद यह प्रथम अवसर था जब हमारे वीर सपूतों और वीरांगनाओं को धर्म से हटकर धार्मिक आयोजन में प्रथम पद पर स्थान दिया गया। कार्यक्रम की कल्पना और रचना श्री अवंति पार्श्वनाथ युवक मंडल द्वारा की गई। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्तियों के साथ ही लगभग 3000 लोगो ने शिरकत कर शहीदों को याद कर अपने भावों से शहीदों और भारत माता की वंदना की।

भगवान से मिला सकते चार पार्षद दया, शील, संतोष ओर सत्यः शास्त्री

संतोष ऐसा वैभव जिसके समक्ष संसार के सारे एश्वर्य समाप्त हो जाते हैं। रामद्वारा धाम में चातुर्मासिक सत्संग प्रवचनमाला

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। व्यक्ति को भगवान से मिलना है तो जीवन में भगवान के चार मुख्य पार्षद दया, शील, संतोष ओर सत्य है जिनसे पहले संपर्क करना होगा। उनमें पहला दया है। प्राणी मात्र पर दया का भाव, या जीव दया। मनुष्य जन्म में दयावान बन जाओगे तो स्वर्ग भी दूर नहीं है। दया मोक्ष मार्ग का प्रधान मार्ग है। शास्त्रों में दया धर्म का मूल स्थान भी है। हमे आत्म कल्याण करना है तो प्राणी मात्र के प्रति दया रखना चाहिए। ये विचार अन्तरराष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा के अधीन शहर के माणिक्यनगर स्थित रामद्वारा धाम में वरिष्ठ संत डॉ. पंडित रामस्वरूपजी शास्त्री (सोजत सिटी वाले) ने शनिवार को चातुर्मासिक सत्संग प्रवचनमाला के तहत व्यक्त किए। उन्होंने गर्ग संहिता के माध्यम से चर्चा करते हुए कहा कि दूसरा पार्षद है शील। शील शब्द बहुत बड़ा तप है ।शीलवान ,पुण्यशील कहीं तरह के श्रेष्ठ पुरुषों में इन शब्दों में उपमा दी जाती है जैसे त्यागी, तपस्वी, ब्रह्मचारी सब शील परंपरा है जो संयम जीवन जीते हैं। ऐसे व्यक्ति में भरपूर ऐश्वर्या ऊर्जा होती है, जो शील व्रत का पालन करते हैं। शास्त्रीजी ने कहा कि तीसरा पार्षद संतोष है। यह एक ऐसा वैभव है जिसके समक्ष संसार के सारे एश्वर्य समाप्त हो जाते हैं। संतोष को आत्मा का अनंत धन परम निधान माना गया है जहां मन की भूख समाप्त हो जाती है। उन्होंने कहा कि चौथा पार्षद सत्य है। सत्य एक ऐसा शब्द है जिसमे ब्रह्म शक्ति और जगत मिथ्या तक आ जाता है, इसके आगे कोई वस्तु नहीं रह जाती है। सत्संग के दौरान मंच पर रामस्नेही संत श्री बोलतारामजी एवं संत चेतरामजी का भी सानिध्य प्राप्त हुआ। चातुर्मास के तहत प्रतिदिन भक्ति से ओतप्रोत विभिन्न आयोजन हो रहे है। भीलवाड़ा शहर के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालु सत्संग-प्रवचन श्रवण के लिए पहुंच रहे है। प्रतिदिन सुबह 9 से 10.15 बजे तक संतो के प्रवचन व राम नाम उच्चारण हो रहा है। चातुर्मास के तहत प्रतिदिन प्रातः 5 से 6.15 बजे तक राम ध्वनि, सुबह 8 से 9 बजे तक वाणीजी पाठ, शाम को सूर्यास्त के समय संध्या आरती का आयोजन हो रहा है।

न्यूज़ जेएसजी अनंता द्वारा रेजीडेंसी स्कूल में बालिकाओं को सिखाये आत्मरक्षा गुर

उदयपुर. शाबाश इंडिया

बालिकाओं में आत्मरक्षा के गुर पैदा करने एवं स्व रक्षा हेतु जागरूक करने के लिए आत्मरक्षा कार्यशाला का आयोजन राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय रेजीडेंसी मधुबन में जेएसजी अनंता ग्रुप द्वारा किया गया। इस अवसर पर मेवाड़ मारवाड़ रीजन चेयरमैन अनिल नाहर, जेएसजीआईएफ संयुक्त सचिव एवम इंटरनेशनल डायरेक्टर मोहन बोहरा, सचिव महेश पोरवाल, इलेक्ट चेयरमैन अरुण मांडोत, कोषाध्यक्ष गजेन्द्र जोधावत उपस्थित थे। आत्मरक्षा प्रशिक्षण के लिए मार्कोज एकेडमी के मांगीलाल सालवी एवं रुकमणी लोहार ने 500 बालिकाओं को प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर स्कूल की प्रधानाध्यापिका रंजना मिश्रा ने भी इस तरह के कार्यक्रम के लिए अनंता ग्रुप को फिर से आमंत्रित किया और कार्यक्रम की सराहना की। अनिल नाहर ने कहा कि फेडरेशन वीक के तहत 19 अगस्त बेटी बचाओ के रूप मैं मनाया जाता है, आज इन बेटियों को आत्मरक्षा के लिए ट्रेनिंग में लड़ते देखना एक ऐतिहासिक पल है। नाहर ने जैन सोशल ग्रुप अनंता को इस सफल आयोजन के लिये बधाइयां दी। मोहन बोहरा ने आत्मरक्षा को आज की सबसे बड़ी जरूरत बताया। अरुण मांडोत ने बालिकाओं को शिक्षित और आत्मनिर्भर होने की बात की। डा. शिल्पा नाहर ने बालिकाओं को मजबूर नहीं मजबूत रहने की सलाह दी और सभी का धन्यवाद किया। सचिव राजेश सिसोदिया ने सभी अतिथियों का स्वागत एवम संचालन किया। इस अवसर पर 600 ग्लासेस मिल्करोज बनवाकर वितरित किया गया। शशिकांत जैन, महेश नाहर, पुनमचंद- कमला तलेटीया, राजेश बाफना, आनंद चोराडिया, लोकेश तलेसरा आदि उपस्थित थे।

श्री भौमियां जी मंदिर में भागवत कथा

संतोषी व्यक्ति जीवन में सदैव सुखी रहता है: अवधेष जी महाराज

जयपुर. शाबाश इंडिया। न्यू आतिश मार्केट एसोसिएशन और भौमियां जी चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में आतिष मार्केट के श्री भौमिया जी मंदिर में चल रही श्रीमद भागवत ज्ञानयज्ञ में आज व्यासपीठ से कथावाचक श्री अवधेष जी महाराज ने कहा कि जीवन में वहीं व्यक्ति सुखी है,जिसके मन में संतोष है,संतोषी व्यक्ति जीवन में सदैव सुखी रहता है। जीवन में कितना भी धन ऐश्वयं की सम्पन्नता हो लेकिन यदि मन में शान्ति नहीं है तो वह व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं रह सकता। वहीं जिसके पास ही धन की कमी भले ही हों सुख सुविधाओं की कमी हो परन्तु उसका मन यदि शान्त है तो वह व्यक्ति वास्तव में परम सुखी है। यह हमेशा मानसिक असंतुलन से दूर रहेगा। कथा प्रसंग मे परम भक्त सुदामा चरित्र पर प्रकाश डालते हुए महाराज ने कहा कि श्रीसुदामा जी के जीवन में धन की कमी थी, निर्धनता थी लेकिन वह स्वयं शान्त ही नहीं परम शान्त थे। इस लिये सुदामा जी हमेशा सुखी जीवन जी रहे थे,क्योंकि उनके पास ब्रह्म (प्रभुनाम) रूपी धन था।

विमर्श जागृति महिला मंच को आचार्य श्री की पूजन का सौभाग्य मिला

अशोक नगर. शाबाश इंडिया। शुक्रवार को विमर्श जागृति महिला मंच को नगर में ससंघ चातुर्मासरत श्रमणाचार्य १०८ श्री आर्जव सागर जी की पूजन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अतः भारी संख्या में सदस्याओं ने उपस्थित होकर पूजन मैं सम्मलित होकर धर्म लाभ लेकर पुण्यार्जन किया। अध्यक्ष प्रीति जैन मोहरी ने बताया कि कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलन विमर्श जागृति महिला मंच की सदस्याओं ने किया, मंगलाचरण स्मृति भारत ने किया ततपश्चात श्रमणाचार्य १०८ श्री आर्जव सागर जी की अष्ट द्रव्य के थाल सजाकर संगीत मय पूजन पूर्ण भक्तिभाव से की गई। सदस्याएं अपनी ड्रेस कोड पिंक साड़ी में अति उत्साह से पूजन कर रही थी। जन कार्यक्रम में अध्यक्ष प्रीति जैन मोहरी, मंत्री मीना महिदपुर, सदस्याएं पूजा देरखा, पूनम पूजा तारई, सरोज,शिखा,समता, पिंकी, मंजू, सुनीता, ज्योति सहित अन्य सदस्याएं उपस्थित रही।

वेद ज्ञान

बोझिल न हो जीवन

कई लोग अपने जीवन की शुरूआत उत्साह के साथ करते हैं लेकिन थोड़े समय बाद वे निराश हो जाते हैं। जीवन में बहुत बाद में उन्हें यह भी लगता है कि उन्होंने जीवन की शुरूआत ठीक तरह से नहीं की या अपने लिए लक्ष्य का निर्धारण ठीक से नहीं किया। मगर यह जीवन को ठीक से नहीं देख पाने का नतीजा है। उदाहरण के लिए ग्रीक योद्धा अलेक्जेंडर बहुत ही महत्वाकांक्षी था। उसका लक्ष्य था कि वह दुनिया पर जीत हासिल करे। मगर मनुष्य की अपनी सीमाएं हैं और अलेक्जेंडर की 32 वर्ष की उम्र में अपने गृहराज्य से 3 हजार किमी दूर बेबीलोन में मृत्यु हो गई। ऐसा ही कुछ हिटलर के साथ भी हुआ। हिटलर भी महत्वाकांक्षा व्यक्ति था। वह जर्मनी का चांसलर भी बना। फिर उसने पूरे योरप पर आधिपत्य करने का इरादा किया और इस इच्छा को पूरा करने के लिए उसने युद्ध का सहारा लिया। यह युद्ध जल्दी ही द्वितीय विश्वयुद्ध में बदल गया। हिटलर अपने सपने को पूरा नहीं कर पाया और 56 वर्ष की उम्र में उसने एक बंकर में आत्महत्या कर ली। इस तरह के कई उदाहरण हमें मिल जाएंगे। कुछ लोग जिंदगी की शुरूआत बहुत ऊंची आकांक्षाओं के साथ की लेकिन वे अपने तय लक्ष्यों को पाने में नाकाम रहे और हताशा में ही उनके जीवन का अंत हो गया। अपने जीवन की शुरूआत में ये लोग बहुत उम्मीद से आगे बढ़ रहे थे लेकिन अंत में नाकाम ही रहे। आज के समय में मौजूदा क्षण में जीना के फार्मूला काफी लोकप्रिय हुआ है। यह एक सुंदर फार्मूला है। मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूं जो इसी फार्मूले पर जिंदगी जी रहे हैं। हालांकि शुरूआत में वे बहुत खुश रहते हैं लेकिन जल्दी ही उन्हें लगता है कि वे अपने जीवन के लक्ष्यों को पाने में नाकाम रहे हैं। आखिरकर वे हताशा का शिकार हो जाते हैं और किसी गंभीर बीमारी के जाल में फंसकर जीने की उम्मीद ही खो बैठते हैं। इस समय प्रसन्नाता या खुशी को सफलता का पैमाना ही नहीं माना जाता है। सही पैमाना तो यह है कि वह व्यक्ति ताउम्र अपनी खुशी को बरकरार रख पाता है या नहीं। जब कोई पेड़ बड़ा हो जाता है तो वह किस तरह के फल देता है इसी से उसकी उपयोगिता सिद्ध होती है। इसी तरह जीवन का सही फार्मूला तो यही है जिसमें व्यक्ति अंत तक संतुष्टि महसूस करे। किसी भी पेड़ की पहचान उसके फलों से होती है। उसी तरह कोई भी इंसान बुढ़ापे में कितना संतुष्ट है इसी से उसके जीवन के भरेपूरे होने का अंदाज लगाया जाता है।

संपादकीय

हुनरमंद लोगों को प्रोत्साहन की बेहद जरूरत

असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले हुनरमंद लोगों को प्रोत्साहन की जरूरत लंबे समय से रेखांकित की जाती रही है। ऐसे लोग जो पारंपरिक पेशों से जुड़े हैं, हाथ का काम करते और भारतीय शिल्प को संरक्षित रखने में योगदान देते हैं, उनकी उपेक्षा और बदहाली को लेकर अक्सर लिखा-कहा जाता है। अब केंद्र ने प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के तहत ऐसे लोगों को वित्तीय मदद पहुंचाने, पहचान प्रतिष्ठित करने और उनके हुनर को बाजार में जगह दिलाने की पहल की है। इस योजना के तहत पांच फीसद ब्याज पर एक लाख और फिर अगले चरण में अधिक धन उपलब्ध कराने की व्यवस्था है। इस योजना के तहत अगले पांच वर्षों में तीस लाख पारंपरिक कामगार परिवारों को लाभ मिलने का दावा है। इसमें तेरह हजार करोड़ रुपए का खर्च आएगा। निस्संदेह इस योजना से ऐसे लोगों को प्रोत्साहन मिलेगा, जो मिट्टी के बरतन बनाने, चटाई बुनने, लुहारगीरी, सुनारगीरी आदि हस्तशिल्प के पारंपरिक पेशों से जुड़े हैं। ऐसे लोग प्रायः पैसे की कमी के चलते अपने पेशे को बड़ा व्यावसायिक मंच नहीं बना पाते। अपने उत्पाद को बड़े बाजार तक नहीं पहुंचा पाते। इस लिहाज से यह योजना काफी मददगार साबित हो सकती है, बशर्ते इसे संजीदगी से लागू किया जाए। हालांकि यह पहली बार नहीं है, जब ऐसे पारंपरिक हस्तकौशल से जुड़े कामगारों को प्रोत्साहित करने के लिए कोई योजना चलाई जा रही है। पहले भी अलग-अलग प्रांतों के हस्तशिल्प को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में जगह दिलाने के मकसद से योजनाएं चलाई जाती रही हैं। अनेक स्वयंसेवी संगठन और सरकारी केंद्र इस दिशा में लगातार प्रयासरत देखे जाते हैं। जगह-जगह विशेष हाट, बाजार और विक्रय केंद्र बना कर हस्तशिल्प को मंच देने की कोशिश की जाती रही है। मगर प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना उन सबसे इस मायने में अलग कही जा सकती है कि इसमें हस्तशिल्पियों को सीधे वित्तीय मदद उपलब्ध हो सकेगी। इससे उन्हें अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने, उन्नत बनाने की दिशा में नए ढंग से सोचने, आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल करने का अवसर मिलेगा। बहुत सारे ऐसे कामगार गुरु-शिष्य परंपरा के तहत दूर-दराज के इलाकों में हस्तशिल्प सीखते हैं। उन्होंने किसी प्रकार की व्यवस्थित शिक्षा नहीं ली है। स्थानीय जरूरतों को ध्यान में रखते हुए वे छोटी-मोटी चीजें बनाते और उन्हें बेच कर किसी तरह अपना गुजारा चलाते हैं। विश्वकर्मा योजना से उनका आत्मविश्वास बढ़ सकता है कि वे भी सुशिक्षित उद्यमियों की तरह अपने कौशल को व्यावसायिक रूप दे सकते हैं। केंद्र सरकार का जोर कौशल विकास पर है। दुनिया भर में माना जा रहा है कि वही अर्थव्यवस्थाएं मजबूत होंगी, जिनमें कौशल विकास पर जोर दिया जाता है। इस दृष्टि से भी यह योजना स्थानीय स्तर पर कौशल विकास की दिशा में एक बेहतर कदम कही जा सकती है। मगर जिस तरह दुनिया भर में अर्थव्यवस्थाएं भारी मशीनों और थोक उत्पादन पर निर्भर होती गई हैं, उसमें स्थानीय कौशल को बड़े बाजार में कहां तक जगह मिल पाएगी, कहना मुश्किल है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

कर्जदारों को राहत

भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआइ ने एक बार फिर कर्जदारों को राहत पहुंचाने का प्रयास किया है। उसने संशोधित दिशा-निर्देश जारी कर कहा है कि अगर कोई कर्जदार समय पर किस्त नहीं चुका पाता तो बैंक उससे दंड शुल्क तो वसूल सकते हैं, मगर उस पर चक्रवृद्धि ब्याज नहीं ले सकते। हालांकि यह निर्देश नया नहीं है। अप्रैल में ही इसका प्रस्ताव आया था और मई में आरबीआइ ने दिशा-निर्देश जारी कर कहा था कि बैंक दंड शुल्क पर चक्रवृद्धि ब्याज न वसूलें। मगर बैंकों ने इस पर अमल नहीं किया, जिसके चलते आरबीआइ को संशोधित दिशा-निर्देश जारी करने पड़े हैं। दरअसल, कोरोना महामारी के बाद बहुत सारे लोगों की आमदनी घट गई है, बहुत सारे लोगों के रोजगार छिन गए, फिर महंगाई पर काबू पाने के लिए आरबीआइ ने रेपो दरों में बढ़ोतरी कर दी, ऐसे में जिन लोगों ने मकान, दुकान, वाहन आदि के लिए कर्ज लिए थे, उन्हें किस्तें चुकाने में दिक्कतें पेश आने लगी। बहुत सारे लोग आज भी किस्तें चुकाने में विफल हो रहे हैं। ऐसे में बैंकों ने दंड शुल्क को अपने पूंजी निर्माण का जरिया बना लिया। उन्होंने दंड शुल्क पर भी चक्रवृद्धि ब्याज वसूलना शुरू कर दिया। इसे लेकर ग्राहकों ने शिकायत दर्ज कराई और आरबीआइ ने इस पर गंभीरता दिखाते हुए दिशा-निर्देश जारी किए। दरअसल, किस्तें न चुकाने पर दंड शुल्क का प्रावधान इसलिए किया गया था कि ग्राहकों को कर्ज चुकाने को लेकर अनुशासित किया जा सके। दंड शुल्क को मूलधन में शामिल नहीं किया जा सकता। बैंक किस्त की राशि का एक से दो फीसद तक दंड शुल्क लगा सकते हैं। मगर बैंकों ने इसे अपनी पूंजी निर्माण का माध्यम समझ कर दंड शुल्क पर भी ब्याज जोड़ना शुरू कर दिया। यह कारोबारी नैतिकता के भी खिलाफ है। हालांकि यह प्रवृत्ति भी नई नहीं है। कोरोना काल में जब लोगों की आमदनी बंद हो गई थी, काम-धंधे रुक गए थे, तब सरकार ने हर तरह के कर्जदारों को राहत देते हुए आदेश जारी किया था कि बंदी के समय में अगर कोई व्यक्ति अपनी किस्तें चुकाने में विफल होता है, तो उससे किसी तरह का दंड न वसूला जाए और उन किस्तों का भुगतान उसे बाद में करने की भी सहूलियत दी जाए। मगर बैंकों ने उन किस्तों को मूलधन में जोड़ कर चक्रवृद्धि ब्याज वसूलना शुरू कर दिया था। तब भी आरबीआइ को दखल देना पड़ा था। दरअसल, बैंकों का कारोबार ही इस बात पर टिका होता है कि वे ग्राहकों को अधिक से अधिक कर्ज देकर उनसे ब्याज वसूलें। इसलिए बैंक ग्राहकों को कर्ज देने का प्रस्ताव देते रहते हैं। मगर उस कर्ज के पीछे ब्याज जोड़ने में वे जिस तरह की मनमानी करते देखे जाते हैं, वह बहुत सारे कर्जदारों के लिए समस्या बन जाती है। किस्तें न चुकाने पर दंड शुल्क वसूलना तो नियम के मुताबिक जायज माना जा सकता है, मगर उस पर फिर से ब्याज जोड़ देना उन पर दोहरा दंड बन जाता है। वैसे ही रेपो दरों में बदलाव के बाद बैंकों को थोड़ी रियायत मिली हुई है कि वे अपनी ब्याज दरों का निर्धारण खुद कर सकते हैं। इसलिए वे प्रायः रेपो दर के अनुपात में अपने कर्ज पर ब्याज की दरें कुछ अधिक ही रखते हैं। इसके बावजूद अगर वे दोहरे दंड की प्रक्रिया अपनाते हैं, तो उसे किसी भी रूप में उचित नहीं कहा जा सकता।

अनेक तपस्यार्थीयों का साहूकार पेठ मे हुआ बहूमान

बिता हुआ समय लौटकर नहीं आता है इसे व्यर्थ ना गवायें : साध्वी धर्मप्रभा

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नई।बिता हुआ समय लौटकर नहीं आता है इस समय को यूही व्यर्थ न गवायें।शनिवार साहूकार पेठ श्री एस.एस.जैन भवन के श्री मरूधर केसरी दरबार मे महासती धर्मप्रभा ने तपस्वीयों सैकड़ों श्रावक श्राविकाओ को धर्म उपदेश देते हुए कहा कि समय को नष्ट करना यानी अपने जीवन के कीमती पलों को बर्बाद करना है। संसार मे मानव भव प्राप्त होना दुलर्भ है। लेकिन मनुष्य समय का सदउपयोग नहीं करता है। समय एक ऐसी चीज है जिसे खोकर पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है। समय तो धन से भी अधिक महत्वपूर्ण है। धन तो हम मेहनत करके कभी भी कमा सकते है लेकिन हमारा बिता हुआ प्रत्येक क्षण लौटकर नहीं आ सकता है। वक़्त रहते इंसान समय का सदुपयोग कर लेगा तो अपने जीवन को बदल सकता है।

जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ द्वारा जरूरतमंदों को भोजन करवाया

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन सोशल ग्रुप इंटरनेशनल फेडरेशन नॉर्दर्न रीजन के तत्वावधान में जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ द्वारा सेवा सप्ताह के दौरान सामाजिक कार्यक्रम दिनांक 19 अगस्त को सुबह 9:45 बजे ट्रोमा हॉस्टपिटल (राजेंद्र- संगीता जैन के सौजन्य से) जरूरतमंद व्यक्तियों को खाना वितरित किया। सचिव राजेंद्र जैन ने बताया कि कार्यक्रम में अभय गंगवाल पूर्व अध्यक्ष एवं मुख्य समन्वयक, अजय जैन संयोजक, रश्मि जैन एवं अंजना गंगवाल उपस्थित थे ।

जीवन अमूल्य धरोहर: मुनि शुद्ध सागर

निवाई. शाबाश इंडिया

सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में बिचला जैन मंदिर मे पांचवें तीर्थकर सुमतिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक महोत्सव अनेक धार्मिक अनुष्ठानों के साथ मनाया गया।चातुर्मास कमेटी के प्रवक्ता राकेश संघी ने बताया कि मुनि शुद्ध सागर महाराज के सानिध्य मे गर्भ कल्याणक को लेकर सुबह भगवान सुमतिनाथ की शांतिधारा के साथ कलशाभिषेक किया गया। इसके बाद क्षुल्लक अकंप सागर महाराज द्वारा भगवान के गर्भ मे आने से पूर्व सोलह स्वप्नो का वर्णन कर रत्नवृष्टी के साथ भगवान सुमतिनाथ की विशेष पूजा अर्चना करवाई गई। इस अवसर पर मुनि शुद्ध सागर महाराज ने कहा कि जीवन अमूल्य है यदि जीवन में सफलता को प्राप्त करना है तो अपने जीवन में अच्छी आदतों को स्थान दें। मुनि शुद्ध सागर ने शनिवार को बिचला मंदिर शांतिनाथ भवन में प्रवचन के दौरान जीवन का सूत्र बताते हुए कहा कि यदि आपको अधिक बोलने की आदत है तो उस पर शीघ्रातिशीघ्र नियंत्रण करें क्योंकि जो अधिक बोलता है उसका कोई भी सम्मान नही करता है। उन्होने कहा कि जितना आवश्यक हो उतना ही बोलो। अन्यता मौन रहने का प्रयास करो मौन से बहुत सारे विवाद तो स्वयं ही टल जाते हैं। मुनि ने कहा कि विधार्थी जीवन बहुत मूल्यवान होता है।विधार्थी जीवन की मेहनत ही भविष्य में महान बना पाएगी। आज के संस्कारो की अल्प पूँजी ही आपको महानता की ओर ले जाएगी। उन्होंने कहा कि स्वाभिमान आत्मा का गुण है।धर्म दया से प्रारम्भ होता है। इस अवसर पर अध्यक्ष हेम चन्द संघी समाज के मंत्री महावीर प्रसाद पराणा सुरेन्द्र टौग्या विष्णु बोहरा नवरत्न टौग्या पदम पराना संजय प्रेस महेन्द्र संघी त्रिलोक रजवास पदम पीपलू रामलाल शाह विमल सौगानी शिवराज चेनपूरा नरेश सौगानी सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

''पर्यूषण-संवत्सरी महापर्व पर क्षमा को जीवन में उतारने का आव्हान''

''क्षमा वीरस्य भूषणम''

अमित गोधा. शाबाश इंडिया

ब्यावर। श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित श्री वर्द्धमान कन्या पी. जी. महाविद्यालय में आज दिनांक 19 अगस्त 2023, शनिवार को ''पर्यूषण-संवत्सरी महापर्व'' की प्रांसगिकता एवं महत्व पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंत्री डॉ. नरेन्द्र पारख ने संवत्सरी महापर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस महापर्व का एक मात्र उद्देश्य आत्मा का विकास है जिसमें सब अपनी क्षमतानुसार अपनी आत्मा की शुद्धि करते हैं। यह पर्व मात्र जैन धर्म का ही नहीं बल्कि यह सार्वभौम पर्व है। संवत्सरी एक ऐसा अवसर है जो हमें महाविनाश से महानिर्माण की ओर अग्रसर करते हुए जीवन निर्माण की प्रेरणा देता है । पर्यूषण पर्व सात दिन त्याग, तपस्या, शास्त्र-श्रवण व धर्म आराधना के साथ मनाने के बाद आठवें दिन संवत्सरी महापर्व के रूप में मनाया जाता है। एक दूसरे से क्षमा याचना कर मैत्री भाव की ओर कदम बढ़ाते हैं। इस दिन वर्ष पर्यन्त किये गये पापों के लिए प्रायश्चित कर अपने मन को निर्मल बना सकते है। अतः हमें हृदय से अपने किये गये कर्मों की समालोचना करनी चाहिए। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में महाविद्यालय में संचालित ''जीवन विज्ञान एव जैन विद्या'' विषय की व्याख्याता श्रीमती सुनीता जैन ने अपने उद्बोधन में बताया संवत्सरी पर्व जैन धर्म का नववर्ष प्रारंभ है । यह हमें वर्ष पर्यन्त संयम प्रधान जीवन जीने हेतु प्रेरणा देता है, सृष्टि कर्म प्रधान है हमें कर्म निर्जरा प्रधान जीवन जीना चाहिए। प्राचार्य डॉ. आर. सी. लोढ़ा ने बताया कि संवत्सरी शुद्ध रूप से आत्म निरीक्षण, आत्म चिंतन, आत्म मंथन व आत्म शोधन का पर्व है। उन्होंने बताया कि जप तप ध्यान स्वाध्याय के द्वारा क्रोध, मान, माया, लाभ, राग, द्वेष आदि आंतरिक शत्रुओं का नाश होगा तभी आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित होगी। कार्यक्रम का संचालन व्याख्याता श्रीमती प्रीति शर्मा ने किया। इस अवसर पर समिति अध्यक्ष शांतिलाल नबरिया तथा सभी संकाय सदस्य, बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं। महाविद्यालय अकादमिक प्रभारी डॉ. नीलम लोढ़ा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्री अरुण जैन का अंग्रेजी उपन्यास डेस्टिनी लोकर्पित

फरीदाबाद. शाबाश इंडिया। अमृता हॉस्पिटल परियोजना में विगत 6 वर्षो से अधिक समय से कार्यरत, पूज्य अम्मा के अनुरागी पुत्र इंजिनियर अरुण जैन के सामाजिक अंग्रेजी उपन्यास डेस्टिनी का लोकार्पण अमृता हॉस्पिटल के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। 77 वें स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित भव्य व गरिमामय कार्यक्रम में डेस्टिनी का लोकार्पण अमृता हॉस्पिटल के प्रशासनिक निदेशक पूज्य स्वामी निजामृतानंद पुरी जी, स्वामी मोक्षामृतानंद जी, स्वामी स्वरूपामृतानंद जी, संस्था के मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ प्रेम नायर, चिकित्सा निदेशक डॉ संजीव सिंह, मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ कर्नल बी. के. मिश्रा व मुख्य सुरक्षा अधिकारी अशोक कुमार ने उपस्थित विशाल जन समूह के मध्य किया। उपन्यास के बिषय में बताते हुए जैन ने कहा कि डेस्टिनी उनके 2005 में प्रकाशित हिंदी उपन्यास संजोग का अंग्रेजी रूपांतरण है. संजोग के कई संस्करण प्रकाशित हुए व रेल मंत्रालय का 2007 का प्रतिष्ठा पूर्ण प्रेमचंद पुरस्कार इस कृति को मिला था.संजोग एक प्रणय गाथा के साथ साथ ओड़िशा के सौंदर्य की कृति है जिसमें बहुत सारी अनुरागी विधाएं समाहित हैं. कर्त्तव्य निर्वहन, सामाजिक दायित्व व बहुमुखी विकास की कहानी है इस कृति में। डेस्टिनी का प्रकाशन देश के प्रतिष्ठित संस्थान नोशन प्रेस चेन्नई ने किया है. यह उनकी 15 वीं कृति है, इसके पूर्व कविता, कहानी, उपन्यास, बाल उपन्यास, बाल गीत, अध्यात्म पर उनकी कई कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। स्वामी निजामृतानंद जी पुरी ने कहा कि श्री अरुण जैन अमृता परिवार के समर्पित सदस्य हैं जिनमें मानवीय संवेदनाओ की निधि समाहित है. इनके कार्य व सेवाएं प्रसंशनीय हैं. सभी उपस्थित महानुभावो ने अरुण जैन को उनकी इस कृति पर बधाई दी। जैन ने अपनी उपलब्धियों का श्रेय पूज्य अम्मा की असीम अनुकम्पा व स्वामी जी के आशीर्वाद को दिया। कार्यक्रम में अमृता हॉस्पिटल परिवार के सभी विभागों के सदस्य उपस्थित थे जिन्होंने स्वतंत्रता दिवस के गौरव शाली ध्वजारोहण कार्यक्रम में सहभागिता की।

डॉ अभिनव जैन प्रथम श्रेणी अधिकारी में चयनित, मुख्यमंत्री द्वारा दिए गए नियुक्ति पत्र

मनीष विद्यार्थी. शाबाश इंडिया

गाडरवारा। शासकीय स्वास्थ्य केंद्र गाडरवारा में पदस्थ शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ अभिनव जैन का प्रथम श्रेणी अधिकारी के रूप में चयन हुआ। डॉ अभिनव जैन मध्यप्रदेश शासन के लोक स्वास्थ्य एवं कल्याण विभाग के द्वारा शिशु रोग विशेषज्ञ प्रथम श्रेणी के पद पर मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित किऐ गये। नियुक्ति आदेश पत्र मा.शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश शासन द्वारा मुख्यमंत्री निवास पर दिनांक 17 2023 को वितरित किए गए। मध्यप्रदेश में वर्तमान में 17 अभ्यार्थियों का ही चयन हुआ है। डॉ अभिनव का चयन होने पर कमलेंद्र जैन राष्ट्रीय मंत्री जैन मिलन, डॉ विमल जैन जबलपुर, राजीव जैन थाला वाले गाडरवारा ,पंकज जैन छतरपुर इंजीनियर महेश जैन सुरेश चंद जैन बीज निगम हेम चंद्र जैन मडदेवरा, मनीष विद्यार्थी सागर एवं भारतीय जैन मिलन और भारतीय जैन संघटना के अनेक पदाधिकारियों ने शुभकामनाएं प्रेषित की।

संगिनी जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ द्वारा गौशाला में गायों को चारा खिलाया

जयपुर. शाबाश इंडिया। संगिनी जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ द्वारा नॉर्दर्न रीजन सेवा सप्ताह के दौरान दुगार्पुर गौशाला में गायों को चारा एवं सब्जी वितरित की। सचिव विजया काला ने बताया कि कार्यक्रम में नूपुर जैन संयुक्त सचिव, सीमा दीवान, अलका पाटनी, पिंकी पाटनी एवं वीरबाला जैन उपस्थित थे।

क्षमा को औपचारिक नहीं सार्थक बनावें

मानव से भूल होना स्वाभाविक है, दैनिक क्रियाओं में जाने-अनजाने कई गलतियाँ हो जाती है, मन में कषाय उत्पन्न हो जाते हैं। इन भूलों को सुधारने के लिए और पुनः नहीं दौहराने के लिए शास्त्रों में विधिसम्मत प्रावधान एवं समाधान दिए हैं। दैनिक, पाक्षिक, चैमासी और सावत्सरिक पर्व पर अपने द्वारा की गयी भूलों का अवलोकन कर कषाय मुक्त होना है, यही सम्यक्त की साधना तथा कर्म निर्झरा कर मोक्ष का मार्ग है। पर्वाधिराज पर्व कहते है- यदि सम्यक दृष्टि बने रहना है, श्रावक बने रहना है तो श्रावक में व्याप्त कषाय चार माह से ज्यादा की आराधना वाले नहीं है, क्योंकि क्षमापना के बिना सम्यक्त्व नहीं आता है अर्थात पावन पवित्र आध्यात्मिक पर्व (सांवत्सरिक क्षमापना पर्व) के प्रसंग पर पूर्वकृत दुष्कृत्यों के लिए क्षमा याचना एवं क्षमा प्रदान नहीं करते हैं तो वे अपने सम्यक्त्व गुण का नाष कर लेते हैं, जब सम्यक्त्व चला जाता है तो श्रावकपना भी चला जाता है, इसलिए श्रावक को क्षमा माँगना एवं करना जरूरी होता है। यह क्षमा शुद्ध भाव से एवं आत्मीयता से हो। औपचारिक रूप से नहीं। क्षमा करने और क्षमा माँगने का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से रूबरू होने में आता है। भावों की विषुद्धि एक-दूसरे के आत्मीय भावों से, बिना किसी शर्त, स्वार्थ एवं हित के क्षमा दी और ली जाती है। क्षमा माँगने से निर्दोषता तथा क्षमा करने से निर्वैरता की प्राप्ति होती है। निर्दोष और निर्वैरता होने पर ही भीतर का अहम गलता है और व्यक्ति के अभिमान रहित होने से उसके भीतर से भेद, भिन्नता और भय का अन्त हो जाता है। भय मुक्त प्राणी सम्यक ज्ञानी कहा जाता है, लेकिन व्यक्ति के मन में सामने वाले व्यक्तियों के प्रति थोड़ी सी शंका, कड़वाहट, मलिनता, सन्देह रहता है तो स्पष्ट है, हमने उसे सच्चे अर्थो में क्षमा नहीं किया केवल औपचारिकता निभायी है। जीवन में जब तक खार होता है, मन में कुटिलता होती है, मलिनता रहती है। अतः ज्ञानियों ने कहा है- हे जीव तूने क्षमा माँगी फिर भी खार रूपी राजद्वेष हैं। कषाय है, तो सच्ची क्षमा नहीं है। तुझे यह क्षमापना का सुनहेरा अवसर प्राप्त हुआ है, सभी जीवों के साथ मैत्री भाव रखने का साहस प्राप्त हुआ है, लेकिन फिर भी हृदय में क्रोध की ज्वाला का शमन नहीं हुआ है। अतः सोच! क्षमा का अवसर मिला। यह तेरा सौभाग्य है, लेकिन क्षमा की सच्ची रीत को नहीं समझा यह तेरा दुर्भाग्य है। इस प्रकार वास्तव में जिससे क्षमा माँगनी है, वहाँ तक हम पहुँच नहीं पाते क्योंकि हमारा अभीमान हमारा 'इगो' बीच में दीवार बन जाता है। आपसी रंजिष दुष्मनी बीच में आ जाती है तथा मैत्रीभाव नदारद हो जाता है। अतः हे देवानु प्रिय! क्षमा का अमृत तो तभी सिद्ध होता है, जब दवा पीए और दर्दी का दर्द मिट जाए अर्थात आत्मा का ''खार'' क्षीण हो जाये या गल जाये। आज हमारा महापर्व सांवत्सरिक क्षमापना पर्व भी औपचारिक बनता जा रहा है। ''क्षमा'' का जो मूल भाव है, वह अन्तस्तः से एवं आत्मीयता से प्रकट नहीं होता। भौतिकता की अंधी दौड़ में इस पर्व की क्षमापना को व्हाट्स एप पर, फैसबुक पर, इन्स्टाग्राम पर केवल संदेष की कॉपी फारवर्ड करने तक सीमित हो गया है। पर्युषण आने से पूर्व ही इस तरह के क्षमापना संदेषों की बाढ़ सी आ जाती है। अधिक संदेष भेजने की होड़ सी मच जाती है। स्थानक में भी या सामुहिक क्षमापना में भी हम केवल अपनी उपस्थिति दर्ज कराने आते हैं और इतिश्री कर लेते हैं। प्रत्येक साधक को अपने हृदय पर हाथ रखकर मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। क्या ऐसी प्रक्रिया 'क्षमा' है? क्या मैं सच्चे मन से क्षमा माँग रहा हूँ ? क्या मैं सच्चे मन से क्षमा कर रहा हूँ? बिना प्रायश्चित किए, अहंकार को लगाले मेरे द्वारा किए गये दुष्कृत्यों को सुधारे बिना क्या मेरे पाप घुल सकते हैं? क्या मैने अपने दुष्कृत्यों का चिन्तन किया है? यदि ऐसा नहीं किया तो क्षमा माँगना, क्षमा करना, क्षमा के संदेष भेजना केवल औपचारिकता है, सार्थकता नहीं है। क्षमा पर अनुसंधान कर निष्कर्ष रूप में बताया कि क्षमा की व्याख्या आम धारणा से बिल्कुल अलग पायी इन्होंने बताया कि अक्सर दोषमुक्त करने या होने के बाद इस भावना से ग्रस्त हो जाते हैं कि अब हमें उनसे क्या लेना देना ? अर्थात वो माफी को नाराजगी के बदलने की स्थिति बना देते है। जबकि क्षमा का मनौवैज्ञानिक और धार्मिक दृष्टिकोण है, जिसने आपको तकलीफ पहुँचायी है, उसके प्रति दुर्भावना से बाहर निकलना। यह आन्तरिक प्रक्रिया है, जो बिना किसी शर्त पर की जाती है। क्षमा करने वालों को इससे आत्मसंतोष होता है। वह उसके लिए एक बहुमूल्य उपहार है। क्षमा पर्व पर हम चैरासी लाख योनी से माँगते हैं। लेकिन सच्चा महत्त्व तब फलीभूत होता है, जिससे क्षमा माँगनी है, उससे माँगे अर्थात जिनसे मन मुटाव है, विवाद है, उनसे माँगें। यदि इनसे माँगी भी है, तो क्या क्षमा के बाद आपके कषाय उनके प्रति छूट गये आपके भाव निर्मल हो गये उत्तर नहीं में आता है अर्थात हमने केवल औपचारिकता निभाई है। इस औपचारिकता का परिणाम हमारे सामने आ रहे हैं जैसे बढ़ता तनाव, रिष्तों में दूरियाँ, एकाकी जीवन पद्धति, मानसिक विकृतियाँ आत्म शान्ति का अभाव तथा पापकर्मों का बन्धन। मनोवैज्ञानिक यहाँ तक कहते हैं, क्षमा न करने से व्यक्ति तनाव ग्रस्त हो जाता है। उसके अति आवश्यक हार्मोन उत्पादन की प्रक्रिया नष्ट हो जाती है। छोटी-छोटी बीमारियों से लड़ने वाली कोषिकाओं को बाधा पहुँचाती है। जिन लोगों के रिष्ते अच्छे नहीं रहते उनमें कार्टिसोल्स हार्मोन का स्तर ज्यादा पाया जाता है। इससे तनाव बढ़ता है, ऐसे में उनकी सोच नकारात्मक बन जाती है, इससे मानसिक विकार तो पैदा होते ही हैं, ईर्ष्या और मनमुटाव की स्थिति व्यक्ति को धीरे-धीरे अवसाद और निराशा के घेरे में घेर लेती है। अतः नफरत इतनी बड़ी नहीं बने कि हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर असर डाले। इस प्रकार स्पष्ट है, क्षमा के मूल भावों को समझें केवल खमाउसा-खमाउसा से लाभ होने वाला नहीं है। क्षमा तो मैत्री भाव रख कर माँगी जाती है, जिनसे की गयी गलतियाँ पुनः नहीं हो तथा वैर सदा-सदा के लिए समाप्त हो जाये। औपचारिक रूप से क्षमा नहीं माँगे, जिनसे वैर, विरोध है, उनसे क्षमा माँगे तथा क्षमा देवे, जिससे सम्यक्त की सुरक्षा हो सके। सम्यक्त्व मोक्ष का साधन और माध्यम है। अतः इस पर्व की गरिमा को दृष्टिगत रखकर मन से आत्मीयता से तथा गहराई से क्षमा के मूल भाव को पर्व के रूप में चरितार्थ करें। क्षमा भाव में जरा भी औपचारिकता को स्थान नहीं देकर सार्थक बनाएं।

पदमचन्द गाँधी
25, बैंक कॉलोनी,
महेश नगर विस्तार-बी,
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर। मो. 94149-67294

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com